हिंदी के प्रवासी कथा साहित्य में वृद्धावस्था विमर्श

लेखक

नीतेश सिंह

पीएचडी शोधार्थी

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

ई–मेल – neeteshsingh901@gmail.Com

शोध निदेशक

डॉ. मंजुनाथ एन. अंबिग

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

स्नातकोत्तर एवं शोध संस्थान

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

ambigdrmanjunath@gmail.com

सारांश :–

हिंदी के प्रवासी कथा साहित्य में वृद्धावस्था विमर्श समकालीन साहित्यिक आलोचना का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि प्रवासी जीवन में वृद्ध पात्र केवल जैविक जरा–अवस्था के प्रतिनिधि नहीं रहते, बल्कि वे स्मृति, मातृभूमि, सांस्कृतिक निरंतरता, भाषिक अस्मिता और पारिवारिक मूल्यों के संवाहक के रूप में उपस्थित होते हैं। प्रवासी संदर्भ में वृद्ध व्यक्ति की स्थिति अधिक जटिल हो जाती है, क्योंकि उसे आयुजन्य निर्बलता के साथ–साथ भाषिक अपरिचय, सांस्कृतिक अलगाव, पीढ़ी–अंतर, पारिवारिक विघटन और भावनात्मक उपेक्षा का भी सामना करना पड़ता है। यह लेख प्रवासी हिंदी कथा साहित्य की प्रकृति, वृद्धावस्था विमर्श की अवधारणा और दोनों के अंतर्संबंध का विश्लेषण करता है। लेख का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि प्रवासी कथा साहित्य में वृद्ध पात्रों का चित्रण आधुनिक परिवार, वैश्वीकरण, विस्थापन और मानवीय संबंधों के संकट को समझने की प्रभावी आधारभूमि प्रदान करता है।

कुंजी शब्द : प्रवासी हिंदी साहित्य, कथा साहित्य, वृद्धावस्था विमर्श, विस्थापन, स्मृति, पीढ़ी–अंतर, सांस्कृतिक अस्मिता।

प्रस्तावना

प्रवासी हिंदी साहित्य उन भारतीय मूल के रचनाकारों का साहित्य है, जिन्होंने भारत से बाहर रहते हुए हिंदी में अपने अनुभवों, संघर्षों, सांस्कृतिक स्मृतियों और पहचान–संकट को अभिव्यक्ति दी है। इस साहित्य में विदेश–गमन, सांस्कृतिक द्वंद्व, नस्लीय अनुभव, मातृभूमि–स्मरण, भाषा–संकट और पारिवारिक संबंधों का पुनर्संयोजन प्रमुख विषयों के रूप में सामने आते हैं। एक अध्ययन में प्रवासी हिंदी साहित्य को ऐसी विशिष्ट साहित्यिक धारा माना गया है, जिसने हिंदी को वैश्विक परिप्रेक्ष्य दिया और देश–विदेश के बीच फैले भारतीय अनुभवों को नए कथ्य प्रदान किए।

प्रवासी साहित्य का अनुभव केवल स्थान–परिवर्तन का अनुभव नहीं हैय यह मनुष्य के भीतर दोहरे जीवन, विभाजित चेतना और निरंतर आत्म–पहचान की खोज का अनुभव भी है। प्रवासी समाज अपनी भाषिक और सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखने का प्रयास करता है, किंतु नई पीढ़ी स्थानीय परिवेश के दबाव में अलग मूल्य–प्रणालियाँ ग्रहण करती जाती है। ऐसे में परिवार के भीतर सबसे अधिक संकटग्रस्त स्थिति प्रायः वृद्धों की होती है, क्योंकि वे अतीत के मूल्यों और वर्तमान के व्यवहार के बीच फँसे रहते हैं।

समकालीन हिंदी आलोचना में वृद्धावस्था विमर्श ने इसी उपेक्षित अनुभव को साहित्यिक केंद्र में लाने का कार्य किया है। वृद्ध व्यक्ति अब केवल करुणा का पात्र

नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना, पारिवारिक नैतिकता और आधुनिक मूल्यबोध की परीक्षा का मानक बनकर सामने आता है। प्रवासी कथा साहित्य में यह विमर्श विशेष अर्थ ग्रहण करता है, क्योंकि यहाँ वृद्ध व्यक्ति 'घर' और 'परदेश' दोनों जगहों पर अधूरेपन का अनुभव करता है।

प्रवासी हिंदी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप

'प्रवास' का सामान्य अर्थ है अपने मूल स्थान या देश से बाहर जाकर किसी दूसरे भू–भाग में निवास करना। प्रवासी हिंदी साहित्य उन भारतीयों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति है जो मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में बसकर हिंदी में लेखन करते रहे हैं। इस साहित्य की संरचना में ऐतिहासिक विस्थापन, श्रम–प्रवास, आजीविका, शिक्षा, सांस्कृतिक उत्तरजीविता और वैश्विक जीवनानुभव का संयुक्त योगदान है।

प्रवासी साहित्य की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उसमें भारतीयता और आधुनिक वैश्विक जीवन के बीच निरंतर संवाद तथा तनाव उपस्थित रहता है। प्रवासी समुदाय अपने साथ भाषा, धर्म, परिवार, उत्सव और स्मृतियाँ लेकर जाता है, किंतु विदेशी परिवेश की सामाजिक संरचना उसे धीरे–धीरे बदलने लगती है। इसीलिए प्रवासी कथा–साहित्य में घर, पहचान, परंपरा, अपनापन, नस्ल, भाषा और पीढ़ीगत दूरी जैसे प्रश्न लगातार उभरते हैं।

प्रवासी हिंदी कथा–साहित्य विशेष रूप से इस कारण महत्त्वपूर्ण है कि वह भारतीय परिवार की उन आंतरिक दरारों को भी उजागर करता है, जो सामान्यतः आधुनिकता की चमक में छिप जाती हैं। प्रवासी कथाकारों ने दिखाया है कि भौतिक सुविधा, पेशेवर सफलता और आधुनिक जीवन–शैली के बावजूद संबंधों की ऊष्मा कम होती जाती है। यही वह भूमि है जहाँ वृद्ध पात्रों का अकेलापन, स्मृति–बोध और सांस्कृतिक असुरक्षा प्रमुख कथ्य बनते हैं।

वृद्धावस्था विमर्श रू सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

वृद्धावस्था विमर्श साहित्य और समाज में उन अनुभवों को केंद्र में रखता है, जिनमें वृद्ध जन उपेक्षा, अकेलेपन, असुरक्षा, परनिर्भरता, आर्थिक संकट, मानसिक अवसाद और संबंध–विच्छेद जैसी समस्याओं से जूझते हैं। इस विमर्श का आधार यह है कि वृद्ध व्यक्ति को केवल जैविक रूप से क्षीण शरीर मान लेना पर्याप्त नहींय उसकी सामाजिक स्थिति, पारिवारिक भूमिका, अनुभव–संपदा और अस्मितात्मक गरिमा भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं।

शोध–आधारित अध्ययनों में यह रेखांकित किया गया है कि आधुनिक समय में संयुक्त परिवार के विघटन, एकल परिवार की प्रवृत्ति, उपभोक्तावाद, भौतिकतावादी मानसिकता और उपयोगितावादी संबंधों ने वृद्धों की स्थिति को अधिक संकटपूर्ण बना दिया है। जो वृद्ध कभी परिवार के केंद्र में थे, वे धीरे–धीरे निर्णय–प्रक्रिया,

संवाद और सम्मानकृतीनों से दूर धकेल दिए गए। परिणामस्वरूप वृद्धावस्था एक सामाजिक अकेलेपन का पर्याय बनती चली गई।

वृद्ध विमर्श इस बात पर बल देता है कि वृद्ध व्यक्ति की समस्या केवल स्वास्थ्य या आयु नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदना का ह्रास भी है। साहित्य में वृद्ध पात्रों का विश्लेषण इसलिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उनके माध्यम से परिवार की नैतिकता, समाज का मूल्य–संकट और मनुष्य के व्यवहार की वास्तविकता स्पष्ट रूप से उजागर होती है।

प्रवासी कथा साहित्य में वृद्धावस्था विमर्श

प्रवासी कथा साहित्य में वृद्ध पात्र बहुस्तरीय संकट से गुजरते हैं। वे एक ओर शारीरिक क्षीणता, स्वास्थ्य–समस्याओं और आश्रित जीवन की विवशताओं से घिरे होते हैं, दूसरी ओर वे भाषा, परिवेश, जलवायु, सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक पद्धतियों की अपरिचित दुनिया में स्वयं को असहज पाते हैं। इस कारण उनकी वृद्धावस्था देशज संदर्भ की तुलना में अधिक जटिल, अधिक अकेली और अधिक मौन हो जाती है।

प्रवासी परिवारों में पहली पीढ़ी, विशेषतः वृद्ध माता–पिता, अपनी स्मृतियों, संस्कारों और मातृभाषा से गहरे जुड़े रहते हैं। इसके विपरीत दूसरी और तीसरी पीढ़ी स्थानीय समाज के मूल्यों, भाषा और जीवन–शैली के अधिक निकट होती है। यह पीढ़ी–अंतर केवल व्यवहारगत नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक दूरी भी

पैदा करता है, जिसके कारण वृद्ध व्यक्ति परिवार के भीतर रहते हुए भी असंबद्ध महसूस करता है।

यहाँ वृद्धावस्था विमर्श प्रवास–विमर्श से मिलकर एक नया आलोचनात्मक आयाम ग्रहण करता है। वृद्ध व्यक्ति केवल आयु के कारण नहीं, बल्कि अपने सांस्कृतिक 'पुरानापन', भाषिक सीमाओं और आर्थिक निर्भरता के कारण भी हाशिए पर पहुँचा दिया जाता है। इस प्रकार प्रवासी कथा साहित्य में वृद्ध पात्र आधुनिकता की मानवीय कीमत को सामने लाते हैं।

प्रमुख आयाम

1. अकेलापन और भावनात्मक उपेक्षा

वृद्ध पात्रों का अकेलापन प्रवासी कथा साहित्य का अत्यंत मार्मिक पक्ष है। विदेश में रह रहे वृद्ध अक्सर परिवार के बीच रहते हुए भी संवादहीनता का अनुभव करते हैं, क्योंकि बच्चों की व्यस्तता, नई पीढ़ी की भाषिक दूरी और जीवन–मूल्यों का बदलाव उन्हें भावनात्मक रूप से निराश्रित बना देता है। प्रवासी जीवन में पड़ोस, बिरादरी और परिचित सामुदायिक संरचना का कमजोर होना इस अकेलेपन को और गहरा करता है।

2. स्मृति और मातृभूमि–बोध

प्रवासी वृद्ध के लिए स्मृति केवल अतीत की याद नहीं, बल्कि अस्तित्व की शरण–स्थली होती है। वह अपने गाँव, घर, भाषा, त्योहार, पारिवारिक रीति–रिवाज और जीवन के पुराने संबंधों को बार–बार याद करता है। यही स्मृति उसे आत्मिक बल देती है, पर यही स्मृति उसे वर्तमान से असंतोष और भीतर की टूटन भी देती है, क्योंकि वह अतीत अब पूरी तरह वापस नहीं आ सकता।

3. पीढ़ी–अंतर और सांस्कृतिक संघर्ष

प्रवासी परिवेश में पीढ़ी–अंतर अधिक तीक्ष्ण रूप में उभरता है। वृद्ध पीढ़ी भारतीय जीवन–मूल्यों, सामूहिकता और पारिवारिक निकटता को महत्त्व देती है, जबकि नई पीढ़ी व्यक्तिवाद, समय–अनुशासन और निजी स्वायत्तता को प्रमुख मानती है। परिणामस्वरूप परिवार के भीतर संस्कार, भाषा, विवाह, धर्म और जीवन–शैली को लेकर तनाव उत्पन्न होते हैं, जिनका प्रभाव सबसे अधिक वृद्धों पर पड़ता है।

4. परनिर्भरता और अस्मिता–संकट

वृद्धावस्था में परनिर्भरता स्वाभाविक है, पर प्रवासी संदर्भ में यह कई स्तरों पर बढ़ जाती हैकृभाषा, स्वास्थ्य–सेवा, परिवहन, कानूनी प्रक्रियाएँ और आर्थिक लेन–देन तक। ऐसी स्थिति में वृद्ध व्यक्ति का आत्मसम्मान आहत होता है और वह

स्वयं को परिवार पर बोझ समझने लगता है। यही स्थिति उसके अस्मिता–संकट को जन्म देती है।

प्रवासी कथाकारों के संदर्भ में विमर्श

प्रवासी हिंदी साहित्य पर उपलब्ध अध्ययनों में सुषम बेदी, उषा प्रियंवदा, तेजेंद्र शर्मा, दिव्या माथुर, सुधा ओम ढींगरा, अभिमन्यु अनत आदि रचनाकारों का उल्लेख बार–बार मिलता है। इन लेखकों की रचनाओं में प्रवासी जीवन की विडंबनाएँ, संबंधों की टूटन, सांस्कृतिक अंतर्द्वंद्व और पहचान–संकट विविध रूपों में अभिव्यक्त हुए हैं। एक शोध–लेख में सुषम बेदी, तेजेंद्र शर्मा, सुधा ओम ढींगरा और अन्य कथाकारों के माध्यम से प्रवासी जीवन की मानसिकता, पीढ़ियों का तनाव और भारतीयता के प्रश्नों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

यद्यपि उपलब्ध सामान्य स्रोत सीधे–सीधे प्रत्येक रचना में वृद्ध पात्रों का विश्लेषण नहीं देते, फिर भी वे यह स्पष्ट संकेत करते हैं कि प्रवासी कथा–साहित्य की मूल समस्याएँकृविस्थापन, पहचान, परिवार, सांस्कृतिक संघर्ष और अकेलापनकृ वृद्धावस्था विमर्श के साथ गहरे रूप में जुड़ी हुई हैं। अतः विशिष्ट रचनाओं के पाठ–विश्लेषण द्वारा इस विमर्श को और अधिक ठोस तथा प्रमाणिक रूप में विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

हिंदी के प्रवासी कथा साहित्य में वृद्धावस्था विमर्श समकालीन यथार्थ को समझने की एक प्रभावी आलोचनात्मक दृष्टि है। यह विमर्श स्पष्ट करता है कि प्रवासी जीवन का संकट केवल भौगोलिक विस्थापन का संकट नहीं, बल्कि संबंधों, स्मृतियों, भाषाओं और पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी का संकट भी है। वृद्ध पात्र इस पूरे संकट को सबसे गहन रूप में जीते हैंय इसलिए उनका अध्ययन प्रवासी साहित्य की संवेदनात्मक और वैचारिक संरचना को समझने के लिए अनिवार्य है।

आधुनिकता, वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी जीवन–शैली ने परिवार की संरचना को बदल दिया है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव वृद्ध जनों की स्थिति पर पड़ा है। प्रवासी हिंदी कथा साहित्य इन परिवर्तनों को मानवीय पीड़ा, स्मृति और आत्मीयता के स्तर पर पकड़ता है। इस दृष्टि से वृद्धावस्था विमर्श केवल साहित्यिक बहस नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, नैतिक जिम्मेदारी और मानवीय संवेदना का भी प्रश्न है।

संदर्भ सूचीः–

1. राठी, सोनिया. "प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन के विविध आयाम." अंतरराष्ट्रीय हिंदी शोध पत्रिका, खंड 2, अंक 4, 2016, पृ. 38–40.
2. मीणा, सियाराम. "हिन्दी का प्रवासी साहित्यरू एक मूल्यांकन." सामाजिक शोध प्रतिष्ठान, 2020.
3. "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्शः एक अनुशीलन." शोधप्रबंध, उपलब्ध डिजिटल प्रति
4. "हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श." शोध–लेख, विवेकानंद कॉलेज प्रकाशन, 2022.
5. "स्वतंत्रता पूर्व कथा साहित्य में वृद्धावस्था." आईजेएफएमआर, 2025.
6. "प्रवासी हिन्दी साहित्य." कश्मीर विश्वविद्यालय हिंदी विभाग की पत्रिका में प्रकाशित सामग्री.
7. "हिन्दी प्रवासी साहित्य में समकालीन विमर्श." आईजेसीआरटी.